स्वतंत्रता संघर्ष में हिन्दी साहित्य का अवदान

सम्पादक

डॉ. मनोज पाण्डेय

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी
के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084
फोन : + 91 9968084132, 7982062594
arpublishingco11@gmail.com

SWATANTRATA SANGHARSH ME HINDI SAHITYA KA AWDAAN
Edited by Dr. Manoj Pandey

ISBN : 978-93-94165-23-6
Criticism

© सम्पादक

संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 695

ले-आउट : शेष प्रकाश शुक्ल
मोबाइल : 97-16-54-35-13

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग
करने के लिए प्रकाशक व सम्पादक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

कॉम्पैक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

स्वाधीनता आंदोलन में साहित्यकारों का अवदान 103
–डॉ. राहुल पुंडलिकराव वाघमारे
राष्ट्रीय चेतना का संकल्प-विकल्प : समर यात्रा 107
–डॉ. लक्ष्मीकान्त चंदेला
स्वतंत्रता संघर्ष में हिन्दी साहित्य की भूमिका 112
–डॉ. लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा
स्वतंत्रता संग्राम में सेनानियों का अवदान 117
–डॉ. सविता टांक
स्वतंत्रता संग्राम में मराठी साहित्यकारों का अवदान 120
–डॉ. नीलम वैरागडे
स्वतंत्रता संघर्ष में हिन्दी साहित्यकारों की भूमिका 125
–डॉ. माया रामशरण बैसवारा
स्वाधीनता संग्राम का हिन्दी काव्य 129
–डॉ. रणजीत जाधव / प्रो. महेबूब मंगरूले
सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय चेतना 134
–डॉ. नेहा कल्याणी
स्वतंत्रता संघर्ष में हिन्दी की भूमिका 138
–प्रीति सुरेंद्रकुमार सोनी
स्वतंत्रता संघर्ष में हिन्दी साहित्यकारों का अवदान 145
–श्रीमती प्रेमलता पाटिल
स्वतंत्रता संघर्ष में हिन्दी साहित्य की भूमिका 152
–रिया पाहुजा
स्वतंत्रता संघर्ष में हिन्दी भाषा और साहित्य की भूमिका 158
–श्वेता शर्मा
स्वतंत्रता संघर्ष में चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' की भूमिका 165
–सत्येन्द्र कुमार शेंडे
पं. माखनलाल चतुर्वेदी : राष्ट्रीय चेतना के प्रेरणा पुंज 171
–डॉ. सपना तिवारी
माखनलाल चतुर्वेदी और सावरकर के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना 178
–साक्षी लालवानी
कलाधर की कलम की शक्ति और स्वतंत्रता संघर्ष 183
–डॉ. सीमा सूर्यवंशी

सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. नेहा कल्याणी

स्वाधीनता के काल के दौरान जहां अंग्रेज सरकार से लड़ने के लिए राजनीति में लगातार प्रयत्न कर रहे थे वहीं दूसरी ओर हिन्दी भाषा के साहित्यकार अपनी लेखनी रूपी तलवार से परतंत्रता की बेड़ियों को काटने के लिए जनता में जनजागृति लाने के लिए प्रयत्न कर रहे थे। क्योंकि स्वतंत्रता किसी एक महापुरुष के संघर्षों से ही नहीं अपितु जनता के जुड़ने से मिली और जनता को जागृत करने का श्रेय साहित्यकारों को ही है।

संकीर्णता की भावना का त्याग करके स्वत्व की भावना को जागृत करने के लिए ये रचनाकार निरंतर भारतीय जनता को प्रबोधित करते हैं। उन रचनाकारों का मानना है कि विदेशी सत्ता हम पर अत्याचार कर रही है पर इसके लिए कहीं न कहीं हम स्वयं ही दोषी हैं। जब तक हम स्वयं को भौगोलिक और जातीय सीमाओं से मुक्त कर अखंड भारत का हिस्सा नहीं मानेंगे तब तक विदेशी ताकतें हम पर यों ही शासन करते रहेंगे। व्यक्ति को अपनी अस्मिता की पहचान होनी चाहिए। रामधारी सिंह दिनकर, निराला, आदि कवियों ने स्वत्व पर आक्रमण होने पर गांधी जी की अहिंसा नीति का विरोध किया है, अन्यथा उनके द्वारा भारतीय पददलित होते रहेंगे। तत्कालीन विविध रचनाकारों ने गीत, उपन्यास और कहानी के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम के लिए कार्य किया। रामलाल पार्षद ने विजयी विश्व तिरंगा प्यारा गीत लिखा जो उस समय सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिन्द सेना का गीत मिला साथ ही राष्ट्रीय पर्व पर झंडारोहण के समय हम आज भी इस गीत को गर्व से गाते हैं।

स्वतंत्रता की मशाल जलाने वाले रचनाकारों में हिन्दी साहित्य की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान जी एक राष्ट्रीय चेतना की सजग रचनाकार रही हैं, जो निरंतर अपनी लेखनी के माध्यम से समाज को प्रबोधित करती थी। उन्होंने न केवल अपनी लेखनी के द्वारा जनजागृति का प्रयत्न किया

किंतु अनेक बार जेल यात्राएं करने के बाद अपनी अनुभूतियों को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति दी है। सुभद्रा जी की जीवन-दृष्टि जीवन को नकारने की नहीं, बल्कि स्वीकारने की थी।

राष्ट्रवाद सुभद्रा कुमारी चौहान जी के रोम-रोम में भरा हुआ है। काव्य क्षेत्र में जलियां वाला बाग में बसंत, राखी, विजयादशमी, लक्ष्मीबाई की समाधि पर और वीरों का कैसा हो बसंत आदि कविताओं में उनका राष्ट्रप्रेम परिलक्षित होता है। राष्ट्रप्रेम की इस श्रृंखला में उनकी झांसी की रानी कविता अत्यंत लोकप्रिय है। अपनी इस कविता से सुभद्रा जी देश के हर छोटे-बड़े व्यक्तियों के दिलों पर राज कर पाईं। वे एक प्रगतिशील नारी, कवि, लेखिका, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, जननेत्री और राजनेता थी। परिणामतः उनके साहित्य में कहीं भी नाटकीयता व बनावटीपन न होकर हृदय स्पर्शी शब्दों का प्रयोग था।

सुभद्रा कुमारी चौहान (16 अगस्त 1904 से 15 फरवरी 1948) राष्ट्रीय चेतना की सजग कवयित्री थी. इन्होंने स्वाधीनता संग्राम में अनेक बार जेल यातनाएँ सहने के पश्चात अपनी अनुभूतियों को कहानी में भी व्यक्त किया। वातावरण चित्रण-प्रधान शैली की भाषा सरल तथा काव्यात्मक है, इस कारण इनकी रचना की सादगी हृदयग्राही है।

"चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"

वीर रस से ओत-प्रोत इन पंक्तियों की रचयिता सुभद्रा कुमारी चौहान को राष्ट्रीय वसंत की प्रथम कोकिला का विरुद दिया गया था। यह कविता है जो जन-जन का कंठहार बनी। कविता में भाषा का ऐसा ऋजु प्रवाह मिलता है कि वह बालकों-किशोरों को सहज ही कंठस्थ हो जाती है। कथनी-करनी की समानता सुभद्रा जी के व्यक्तित्व का प्रमुख अंग है। इनकी रचनाएँ सुनकर मरणासन्न व्यक्ति भी ऊर्जा से भर सकता है। ऐसा नहीं कि कविता केवल सामान्य जन के लिए ग्राह्य है, यदि काव्य-रसिक उसमें काव्यत्व खोजना चाहे तो वह भी है।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में।

स्वतंत्रता संग्राम के समय जो अगणित कविताएँ लिखी गईं, उनमें इस कविता और माखनलाल चतुर्वेदी और एक भारतीय आत्मा की पुष्प की अभिलाषा का अनुपम स्थान है। सुभद्रा जी का नाम मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन की यशस्वी परम्परा में आदर के साथ लिया जाता है। वह बीसवीं शताब्दी की सर्वाधिक यशस्वी और प्रसिद्ध कवयित्रियों में अग्रणी हैं।

18 मार्च 1923 का जबलपुर का झंडा सत्याग्रह देश का पहला सत्याग्रह था और सुभद्रा जी पहली महिला सत्याग्रही थीं। रोज-रोज सभाएँ होती थीं और जिनमें सुभद्रा जी भी बोलती थीं। टाइम्स ऑफ इंडिया के संवाददाता ने अपनी एक रिपोर्ट में उनका उल्लेख लोकल सरोजिनी कहकर किया था। सुभद्रा जी में बड़े सहज ढंग से गंभीरता और चंचलता का अद्भुत संयोग था। वे जिस सहजता से देश की पहली स्त्री सत्याग्रही बनकर जेल जा सकती थीं, उसी तरह अपने घर में बाल-बच्चों में और गृहस्थी के छोटे-मोटे कामों में भी रमी रह सकती थीं।

जलियाँवाला बाग, 1917 के नृशंस हत्याकांड से उनके मन पर गहरा आघात लगा। उन्होंने तीन आग्नेय कविताएँ लिखीं। 'जलियाँवाले बाग में वसंत' में उन्होंने लिखा :

परिमलहीन पराग दाग-सा बना पड़ा है
हा! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।
आओ प्रिय ऋतुराज!
किंतु धीरे से आना, यह है शोक स्थान,
यहाँ मत शोर मचाना।
कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर।

सन 1920 में जब चारों ओर गांधी जी के नेतृत्व की धूम थी, तो उनके आह्वान पर दोनों पति-पत्नी स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए कटिबद्ध हो गए। उनकी कविताएं इसीलिए आजादी की आग से ज्वालामयी बन गई है।

उन्होंने लगभग 88 कविताओं और 46 कहानियों की रचना की, पर उनकी प्रसिद्धि 'झांसी की रानी' कविता के कारण है। किसी कवि की कोई कविता इतनी अधिक लोकप्रिय हो जाती है कि शेष रचनाएँ प्रायः गौण होकर रह जाती हैं। बच्चन की मधुशाला और सुभद्रा की इस कविता के साथ यही हुआ। यदि केवल लोकप्रियता की दृष्टि से ही विस्तार करें तो उन कविता पुस्तक मुकुल 1930 छह संस्करण उनके जीवन काल में ही हो जाना कोई सामान्य बात नहीं है। इनका पहला काव्य संग्रह मुकुल 1930 में प्रकाशित हुआ। इनकी चुनी हुई कविताएं त्रिधारा में प्रकाशित हुई हैं। झांसी की रानी इनकी बहुचर्चित रचना है। राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी और जेल यात्रा के बाद भी उनके तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हुए।

–बिखरे मोती (1932) 15 कहानियां
–उन्मादिनी (1934) 9 कहानियां
–सीधे सादे चित्र (1947) 14 कहानियां

सुभद्रा कुमारी चौहान की क्रांति-कथाएँ

कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान शादी के महज डेढ़ साल के भीतर ही अपने पति श्री लक्ष्मण सिंह के साथ स्वतंत्रता संग्राम में पूरी तरह से समर्पित हो चुकी थीं। छोटे बच्चों को गोद में लिये सुभद्रा जुलूसों में भूखी-प्यासी शामिल रहीं, कुछ मिला तो बच्चों को दे दिया। स्वतंत्रता का जो अलख वे जगा रही थीं, उसमें उनका तन-मन सब कुछ आहुति बन रहा था। देश के लिए कर्तव्य और समाज की जिम्मेदारी संभालते हुए उन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थ की बलि चढ़ा दी। नमक सत्याग्रह के दौरान ठाकुर लक्ष्मण सिंह को जेल जाना पड़ा।

सुभद्रा कुमारी की कहानियों में भी राष्ट्रीयता का स्वर प्रमुख था। वह आम आदमी के दिल की आवाज कहती थीं। कहानियों के संवादों में निर्भीकता और देश के लिए बलिदान हो जाने की ध्वनि स्पष्ट सुनाई देती थी। उनकी एक कहानी तांगे वाले का एक अंश यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत है :

"जब से सत्तावन के गदर का इतिहास पढ़ा और यह जाना कि फिरंगी कैसे आए और कैसे फैल गए सारे हिंदुस्तान में, तब से हुजूर, बदले की भावना से रात-दिन जलता रहता हूँ इसलिए सरकारी नौकरी छोड़ दी। माँ-बाप नाराज हो गए तो घर ही छोड़ दिया। तब से यह तांगा चलाता हूँ पर तांगे पर भी किसी साले फिरंगी को बैठाकर तांगा न हाँकूँगा। क्यों? फिरंगी को न बैठाने की कसम क्यों खा ली? मेरे पुरखे-सारे हिंदुस्तान में गदर के समय इन फिरंगियों ने क्या कम जुल्म किए हैं? गाँव के गाँव जला दिए, औरतों को बेइज्जत किया, निरपराध लोगों को तोपों के मुँह से बाँधकर उड़ा दिया... कहते-कहते कोचवान रुका। तुम्हारे विचार तो क्रांतिकारियों जैसे हैं। तुम्हारा नाम क्या है? किसी क्रांतिकारी को जानते हो? मेरा नाम हुजूर रामदास है। किसी क्रांतिकारी को नहीं जानता। नाम जरूर सुने हैं, उन लोगों के जीवन चरित्र पढ़े हैं पर उन लोगों में भी मुखबिर बनने वालों की कमी नहीं है हुजूर। महात्मा गाँधी के सत्याग्रह आंदोलन में भी बहुत दिनों तक शरीक रहा हूँ, हुजूर। दो बार जेल भी हो आया पर तबीयत नहीं भरती। मेरे अंदर से तो जैसे कोई पुकार उठता है गदर सन सत्तावन का सीन एक बार दुहराया जाए। इन फिरंगियों से कसकर बदला लिया जाय तभी उद्धार होगा।

संदर्भ

1. सुभद्रा कुमारी चौहान, डॉ. सी एल. देसाई, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली
2. सुभद्रा कुमारी चौहान, एम आई राजवी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
3. स्वतंत्रता संग्राम, रामसेवक श्रीवास्तव, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया
4. क्रांति यज्ञ (1857-1947 की गाथा), समीक्षक, गोवर्धन यादव, मानस संगम, प्रधान नारायण त्रिवाठी, कानपुर